क्या है राहुकाल?

राहु को छाया ग्रह माना गया है। यह ग्रह अशुभ फल प्रदान करता है। इसलिए इसके आधिपत्य का जो समय रहता है, उस दौरान शुभ कार्य करना वर्जित माना गया है। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय में से आठवें भाग का स्वामी राहु होता है। इसे ही राहुकाल कहते हैं। प्रत्येक दिन लगभग 90 मिनट का एक निश्चित समय होता है, जो राहुकाल कहलाता है। राहुकाल दिनमान के आठवें भाग का नाम है। राहुकाल का समय किसी स्थान के सूर्योदय व वार पर निर्भर करता है।

राहुकाल विचार केवल दिन में ही किया जाता है। राहुकाल का विशेष रविवार, मंगलवार तथा शनिवार को आवश्यक माना गया है। बाकी दिनों में राहुकाल का नकारात्मक प्रभाव विशेष नहीं होता। राहुकाल स्थान और तिथि के अनुसार अलग-अलग होता है अर्थात् प्रत्येक वार को अलग समय में शुरू होता है। यह काल कभी सुबह, कभी दोपहर तो कभी शाम के समय आता है, लेकिन सूर्यास्त से पूर्व ही पड़ता है। राहुकाल की अवधि दिन (सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय) के 8वें भाग के बराबर होती है यानी राहुकाल का समय डेढ़ घण्टा होता है। वैदिक शास्त्रों के अनुसार इस समय अवधि में शुभ कार्य आरंभ करन से बचना चाहिए। कहते है कि राहुकाल में घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए, कोई महत्वपूर्ण या मांगलिक कार्य भी नहीं करना चाहिए।

यात्रा-प्रकरण - दिशाशूल ज्ञानार्थ चक्रम्

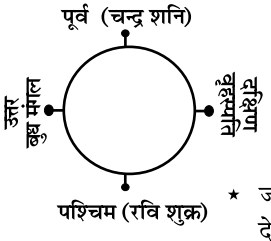

सोम सनीचर पूरब ना चालू। मंगल बुध उत्तर दिसि कालू॥
रवि शुक्र जो पच्छिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय॥
गुरु को दक्खिन करे पयाना। फिर नहीं समझो ताको आना॥

यात्रा कैसे शुभ हो।

- ★ जाने के समय नेबला, मछली, दर्पण, चील, चकवा और नीलकण्ठ इन्हें देखना अत्यन्त शुभ एवं मनोकामनापूर्ण करने वाला माना जाता है। अमृत, साधु, सुन्दर पुष्प, अच्छे फल, सुहानी बात, और सीताराम की कविता ये सात सुन्दर शकुन है।
- ★ यात्रारम्भ में बिल्लियों का युद्ध, रजस्वला स्त्री का सामने आना, जननी का तिरस्कार, अकाल वृष्टि परिवारीय मृत सूतकों में शुभ की इच्छा रखने वाला यात्रा न करे।
- ★ घर से निकलते समय '**गमने वाञ्छये सुमाधवे**' उच्चारण करके निकले।

रामलखन कौसिक सहित, सुमिरहु करहु पयान। लक्षि लाभ जय जगत जसु, मंगल सगुन पयान॥
भरत सगुसूदन लखन, सहित सुमिरि रघुनाथ। करहु काज सुम साज सब, मिलाहि सुमंगल साथ॥

नोट - दिशाशूल में यदि यात्रा करना आवश्यक ही हो तो निम्नांकित वस्तु खाने से यात्रा शुभ होगी ।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
वस्तु	घी, गुड़ लाल चन्दन पान लाल सुपाड़ी युक्त	दूध रबड़ी श्वेत चन्दन मसूर, गेहूँ	गुड़ लाल चन्दन मसूर गेहूँ	पुष्प पिश्ता मूंग का हलुआ पान कस्तूरी	दही गुड़ बेसन हलुआ लाल चन्दन	घी, दही वर्फी,काजू पान कपूर युक्त	तिल, चना उड़द आँवला पान लौंग युक्त

चन्द्र दिशा ज्ञान	मेष, सिंह और धनु का चन्द्रमा	पूर्व में
	कन्या, वृष तथा मकर का चन्द्रमा	दक्षिण में
	कुम्भ, तुला एवं मिथुन का चन्द्रमा	पश्चिम में
	कर्क, वृश्चिक एवं मीन का चन्द्रमा	उत्तर में
चन्द्र दिशा फल	सम्मुख चन्द्रमा हो तो लाभ	दाहिने हो तो शुभ
	पीछे हो तो दु:ख	बायें हो तो हानि

नवग्रहों के दान, मन्त्र एवं जाप आदि

रत्न	बीज-मन्त्र	जप.सं.	आराधन	धारण	दान	वार
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	7,000	हरिवंशपुराण श्रवण	माणिक्य	गेहूँ, गाय, गुड़, तांबा, सोना, लाल, वस्त्र, लाल कमल, रक्तचन्दन, मूंगा आदि।	रवि
चन्द्र	ॐश्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः	11,000 सन्ध्याकाल	शिवस्तुति	मोती मूनस्टोन	चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चाँदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चन्दन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, घृत, दधि, मोती।	सोम
मंगल	ॐक्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	10,000	शिवस्तुति	प्रवाल मूंगा	तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी विद्रुम ।	मंगल
बुध	ॐब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	9,000 5 घड़ी दिन शेष	अमावस्या व्रत उपवास	पन्ना	कांसा, हाथीदांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, स्वर्ण, कपूर, वस्त्र, फल, षढ़रस-भोजन, घृत, सर्वपुष्प।	बुध
गुरु	ॐग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	19,000 सन्ध्याकाल	अमावस्या व्रत	पुखराज	पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र।	गुरू
शुक्र	ॐद्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	16,000 सूर्योदय	गौ-पूजा	हीरा जरकन	चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गन्धद्रव्य, चीनी, गौ, भूमि।	शुक्र
शनि	ॐखां खीं खौं सः शनैश्चराय नमः	23,000 सूर्योदय	मृत्युंजय-जप शनिवार का उपवास	नीलम	तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण,छाता।	शनि
राहु	ॐभ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	18,000 रात्रि	मृत्युंजय-जप शनिवार का उपवास	फिरोजा	अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्रपात्र, सप्त-धान्य, उड़द, गोमेद, काला पुष्प, तेल, कम्बल, घोड़ा, खड्ग।	शनि
केतु	ॐप्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः	17,000 रात्रि	मृत्युंजय-जप शनिवार का उपवास	लहसुनिया	कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कम्बल, उड़द, वैदुर्य, काला पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र।	शनि

नवग्रह साधना समाधान सूत्रावली-

आहार-व्यवहार, वस्त्र-विचार, नित्य के जनजीवन में अरिष्ट कष्टप्रदायक ग्रहों के वारानुसार वेशभूषा वस्त्र धारण करना, यथाशक्ति अनुदान करना आदि सरल सुगम ग्रहजनित आधि-व्याधि निवरक सूत्र हैं।

सूर्य - रविवार के दिन मसूर की दाल, गुड़का हलवा, लाल रंग के वस्त्र धारण करें। लाल बोतल के पानी का उपयोग करें। सूर्य, पिता एवं पितृपक्ष- दादा दादी और दशम भाव कारक हैं। सूर्य विषयक विकार शान्त करने हेतु पिता एवं दादा-दादी तथा वयोवृद्धजन की सेवा करें।

चन्द्र - यदि चन्द्रमा नीच का अथवा क्षीण है तो सोमवार के दिन दही, चावल, दूध, एवं सफेद वस्तु का भोजन में सेवन व सफेद वस्त्र धारण करें। चन्द्रमा माता और उनके सम्बन्ध वाले रिश्तेदार यथा मौसा- मौसी, मामा -मामी तथा चतुर्थ भाव का कारक होने से मातृपक्ष से सम्बधित रिश्तेदारों की सेवा करें चन्द्रजनित दोष स्वत: ही नष्ट हो जाते हैं।

मंगल - मंगल यदि निर्बल एवं कष्टकारक है तो लाल वस्त्र व रुमाल का प्रयोग, भोजन में गाजर, टमाटर, लालमिर्च, मसूर की दाल, लाल रंग के फल का सेवन करें। मंगल भाई, पराक्रम व तृतीय भाव का कारक है। अत: मंगल दोष निवारण के लिये भ्राता एवं इनके प्रियजन के प्रति सम्मान व सेवा सहायता का मनोभाव रखें।

बुध - बुधवार के दिन साबुत हरे मूंग, इसी की छिलके सहित दाल, हरी, साग- सब्जी तथा सभी हरे रंग के फल का भोजन में प्रयोग अधिक करें एवं हरे रंग के रुमाल, हरे वस्त्र भी धारण करें। हरे रंग की बोतल में रखा पानी पीना भी अनुकूल रहता है। बुध बहन, बुआ, पुत्री, भूमि, भवन, वाहन, व्यापार आदि का कारक है। बुधजनित दोष निवारण हेतु बहन, बुआ, पुत्री आदि की सेवा सुश्रुषा करना विशेष शुभ है।

गुरु - यदि निर्बल एवं कष्ट प्रदायक है तो इस दिन चने की दाल, बेसन, बेसन का हलवा, तुअर दाल, सभी पीले रंग के फलों का सेवन, पीले रंग के मिष्ठान का भोजन करें। वृहस्पति गुरुजनित विकार निवारण हेतु शिक्षक, गुरु, ब्राह्मण, साधु, सन्त, गौ माता आदि की सेवा साधना करें।

शुक्र - दोष निवारण हेतु उड़द की दाल, दूध-दही, खीर, साबूदाना, पोहा, केला, चावल, मैदा, सूजी, सफेद मिष्ठान का प्रयोग करें तथा सफेद रंग की पोशाक पहनें। सभी स्त्री वर्ग का सम्मान करें।

शनि - दोष निवारण हेतु काले उड़द, काले तिल, काले अंगूर, जामुन आदि काले फूलों का सेवन, काले वस्त्र अथवा आसमानी व हल्के नीले रंग के वस्त्र धारण करें। शनि सेवक नौकर, दलित, निर्धन षष्ठ भाव का कारक है। अत: इन जन समुदाय की सहायता व अनुराग करें।

शिववासज्ञानम्

हवन दिन तिथि संख्या को दूना करके 5 और मिलावें, 7 से भाग करने पर 1 शेष बचे तो शिवजी का वास कैलाश पर श्रेष्ठ, 2 शेष में गौरी पार्श्वे श्रेष्ठ, 3 शेष में वृषारूढ़ श्रेष्ठ, 4 शेष में सभायां सन्ताप, 5 शेष में ज्ञानवेलायां पीड़ा, 6 शेष में क्रीड़ायां दु:ख शोक और 0 शेष अर्थात् भाग पूरा लगने पर शिववास शमशानभूमि में होता है। जिसका फल मृत्यु कहा गया है ।

शिववास शुभ तिथि

शुक्ल पक्ष की तिथियाँ	2	5	6	9	12	13
कृष्ण पक्ष की तिथियाँ	1	4	5	8	11	12

सर्वांक सिद्धियोग

शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें-क्रमश: 7,8,3 का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हों तो क्लेष, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्तमें हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायाँ स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायाँ स्वर चलते समय दक्षिण व नैऋत्य को नहीं जाना चाहिए, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने का मन च चाहे तो कदापि न जाये क्योंकि मुहूर्त्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

चन्द्रमा से पाया विचार

जन्मकुण्डली के 1,6,11 वें स्थान में चन्द्रमा हो तो स्वर्णपाद, 2,5,9 चांदी, 3,7,10 में तांबा और 4,8,12 भाव में हो तो लोहे के पाया के जन्म हुआ है ऐसा जानें यह मत सर्वमान्य है।

नक्षत्र से पाया विचार

आर्द्रादि दशकं रूपं विशाखादि युगलोहकम्। पूषादि सप्तताम्रश्च, रेवत षष्ठ स्वर्णकम्॥

आद्रादि 10 नक्षत्र चांदी के पाया। विशाखा से 4 में लोहपाद। पू.षा. से 7 तक ताम्रपाद और रेवती से 6, नक्षत्रों में जन्म हो तो स्वर्णपाद से जानना चाहिये। तांबा, चांदी, श्रेष्ठ, लोहा और स्वर्णपाद फल नेष्ट होता है।

व्यवसाय में सफलता हेतु		परीक्षा में जाने के समय
रविवार -	पान खाकर जायें।	पान या तुलसी खाकर जायें ।
सोमवार-	दर्पण देखकर जायें।	दर्पण देखकर जायें ।
मंगलवार-	गुड़ खाकर जायें।	आलू, अरबी, गाजर, शकरकंदी, खाकर जायें।
बुधवार-	धनिया चबाकर जायें।	शहद खाकर जायें ।
गुरुवार-	जीरा खाकर जायें।	दही बतासे या दही पेड़ा खाकर जायें ।
शुक्रवार-	दही खाकर जायें।	कालीमिर्च, अदरक, राई खाकर जायें ।
शनिवार-	अदरक खाकर जायें।	तेल या तिल ग्रहण करके जायें ।

नवग्रह शान्ति के सरल उपाय

सूर्य 1. लाल चन्दन को घिसकर स्नान के जल में डालें। 2. हाथ में मोली (कलावा) छः बार लपेटें। 3. किसी भी महत्वपूर्ण कार्य पर जाते समय मीठी वस्तु खाकर निकलें। 4. लाल गाय को दोनों हाथों में भरकर गेहूँ खिलायें। 5. रात्रि को ताम्र कलश में जल भर कर सिरहाने रखें, प्रातः काल उसे पीयें। 6. सूर्य को रोली डालकर '**ॐ सूर्याय नमः**' 10 बार बोलें 11वीं बार '**ॐ आदित्याय नमः**' बोलकर अर्घ्य चढ़ायें।

चन्द्रमा 1. दूषित जल का संग्रह न होने दें। 2. सफेद पुष्प वाले सुगंधित पौधे लगायें। 3. सोमवार के दिन श्वेत वस्तुऐं दान दें।

मंगल 1. बन्धुजनों को मिष्ठान सेवन कराये। 2. लाल वस्त्र में बाँधकर सवा किलों मसूल की दाल भिखारी को दें। 3. मंगलवार के दिन हनुमान जी के चरण से सिन्दूर लेकर उसका टीका माथे पर लगायें। 4. बंदरों को गुड़ चने खिलायें। 5. घर में लाल-पुष्प वाले पौधे लगायें। 6. घर बनाते समय लाल-पत्थर का प्रयोग करें।

बुध 1. घर में तुलसी का पौधा लगायें। 2. हरा चारा और हरी सब्जियाँ गाय को खिलायें। 3. बुधवार के दिन गणेश जी के मन्दिर में मूँग के लड्डुओं का भोग लगायें तथा बच्चों में बाँटें। 4. घर में खंडित एवं फटी हुई धार्मिक पुस्तकें न रखें। 5. घर में कटीले पौधे झाड़ियाँ व वृक्ष न लगायें।

गुरु 1. माता-पिता गुरुजन व पूजनीय व्यक्तियों के प्रति आदर भाव रखें। 2. सफेद चन्दन की लकड़ी को पत्थर पर घिसकर लगायें। 3. गुरुवार के दिन मन्दिर में केले के पेड़ के सम्मुख गोघृत का दीपक जलायें। 4. गुरुवार के दिन आटे की लोई में चने की दाल गुड़ एवं पिसी हल्दी डालकर गाय को खिलायें।

शुक्र 1. काली चीटीयों को चीनी खिलानी चाहिए। 2.शुक्रवार के दिन सफेद गाय को आटा खिलायें। 3. किसी को सफेद वस्त्र एवं सफेद मिष्ठान का दान करें। 4. कन्यादान का अवसर मिले तो अवश्य करें।

शनि 1. शनिवार के दिन पीपल की जड़ में तिल के तेल का दीपक जलायें। 2. शनिवार को सरसों तेल का दान करें। 3. भिखारी को उड़द की दाल की कचौड़ी खिलायें। 4. पीपल पर जल चढ़ायें एवं हनुमान चालीसा का 11 बार पाठ करें।

राहु 1. अष्टधातु का कड़ा दाहिनें हाथ में पहनें। 2. सफेद चन्दन अपने पास रखें। 3. संधिकाल में कोई महत्वपूर्ण कार्य न करें। 4. पक्षियों को दाना खिलायें।

केतु 1. नारियल में मेवा भरकर भूमि में दवा दें। 2. भिखारी को दो रंग का कम्बल दान करें। 3. किसी पवित्र नदी का जल घर में रखें। 4. बकरी को हरा चारा खिलायें।

महत्त्वपूर्ण बातें

प्रश्न- मंदिर में दर्शन के बाद बाहर सीढ़ी पर थोड़ी देर क्यों बैठा जाता है?

उत्तर- परम्परा है कि किसी भी मंदिर में दर्शन के बाद आकर मन्दिर की पौड़ी या ओटले पर थोड़ी देर बैठना। क्या आप जानते हैं कि इस परम्परा का क्या कारण है? आजकल तो लोग मंदिर की पैड़ी पर बैठकर अपने घर-राजनीति इत्यादि की चर्चा करते हैं, परंतु यह प्राचीन परम्परा एक विशेष उद्देश्य के लिए बनाई गई है। वास्तव में मंदिर की पैड़ी पर बैठकर एक श्लोक बोलना चाहिए। यह श्लोक आजकल के लोग भूल गये हैं। इस श्लोक को मनन करें और आने वाली पीढ़ी को भी बतायें। श्लोक इस प्रकार है-

अनायासेन मरणम्, बिना दैन्येन जीवनम्। देहान्त तव सानिध्यम्, देहि में परमेश्वरम्।।

इस श्लोक का भाव है-

अनायासेन मरणम् अर्थात् बिना तकलीफ के हमारी मृत्यु हो और कभी भी बीमारी से बिस्तर पर न पड़ें, कष्ट उठाकर मृत्यु को प्राप्त न हों। चलते-फिरते ही हमारे प्राण निकल जायें।

बिना दैन्येन जीवनम् अर्थात् परवशता का जीवन न हो। कभी किसी के सहारे न रहना पड़े। लकवा हो जाने पर व्यक्ति को दूसरे पर आश्रित होना पड़ता है, वैसे परवश या बेबस न हों। ठाकुर जी की कृपा से बिना भीख के ही जीवन बसर हो सकें।

देहांते तव सानिध्यम् अर्थात् जब भी मृत्यु हो तब भगवान् के सम्मुख हों। जैसे भीष्म पितामह की मृत्यु के समय स्वयं ठाकुर (श्रीकृष्ण) उनके सम्मुख जाकर खड़े हो गये। उनके दर्शन करते हुए प्राण निकलें।

देहि मे परमेश्वरम् हे परमेश्वर ऐसा वरदान हमें देना। भगवान से प्रार्थना करते हुए उपरोक्त श्लोक पाठ करें। गाड़ी, लाड़ी, लड़का, लड़की, पति, पत्नी, घर, धन इत्यादि (अर्थात् संसार) नहीं माँगना है, यह तो भगवान् आपकी पात्रता के हिसाब से खुद आपको देते हैं। इसीलिए दर्शन करने के बाद बैठकर यह प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए। यह प्रार्थना है, याचना नहीं है। याचना सांसारिक पदार्थों जैसे कि घर, व्यापार, नौकरी, पुत्र, पुत्री, सांसारिक सुख, धन या अन्य हेतु की जाती है।

'प्रार्थना' शब्द के 'प्र' का अर्थ होता है 'विशेष' अर्थात् विशिष्ट, श्रेष्ठ और 'अर्थना' अर्थात् निवेदन। प्रार्थना का अर्थ हुआ विशेष निवेदन।

मन्दिर में भगवान् का दर्शन सदैव खुली आँखों से प्रेम से निहारते हुए करना चाहिए। कुछ लोग वहाँ आँखें बंद करके खड़े रहते हैं। हम दर्शन करने आए हैं। भगवान् के स्वरूप, श्रीचरणों, मुखारविंद, शृंगार का सम्पूर्ण आनंद लें और जब दर्शन के बाद बाहर आकर बैठें, तब नेत्र बंद करके तत्काल दर्शन किए गए स्वरूप का ध्यान करें। पैड़ी पर बैठ कर स्वयं की आत्मा का भी ध्यान करें। अगर आत्मस्वरूप ध्यान में भगवान् नहीं आए तो दोबारा मंदिर में जायें और पुनः दर्शन करें।

।।हरि ॐ तत्सत्।।

पूजन के अंग

पञ्च उपचार – गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

दश उपचार – पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र निवेदन, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

षोडश उपचार – पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तवपाठ, तर्पण, नमस्कार।

स्नान करके पुष्प व तुलसी दल तोडें। तुलसी का एक-एक पत्ता न तोड़कर पत्तियों के साथ अग्रभाग तोड़ें मंजरी सब फूलों से बढ़कर है। मंजरी तोड़ते समय पत्तियों का रहना आवश्यक है। तुलसीदल मंगल, शुक्र और रवि को द्वादशी, अमावस्या व पूर्णिमा तथा जननाशौच और मरणाशौच में न तोड़ें। किन्तु वृक्ष से गिरा हुआ तुलसी कभी भी ले सकते हैं। बिना स्नान व जूता पहनकर, सन्ध्या समय व रात्रि में भी तुलसी न तोड़ें।

किस माला से करें जाप

इष्ट का जाप किस माला से करें यह अति महत्वपूर्ण है। यूँ तो 27, 54, 108 माला होती है किन्तु 108 दाने की माला श्रेष्ठ है। एक सुमेरु नाम से दाना होता है। इसका उल्लंघन नहीं होता। शंख माला जप से सौ गुना, प्रबाल से सहस्त्र, स्फटिक माला से दस सहस्त्र, मुक्ता माला से लाख, कमलगट्टा माला से दस लाख, कुशमल माला से सौ करोड़ व रुद्राक्ष माला से अनन्त कोटि फल मिलता है। रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ माला है। मोती माला से मन की शान्ति के लिए जाप करते हैं।

तुलसी माला – इस माला से श्रीहरि के सभी नामों तथा मंत्रों का जाप किया जाता है।

स्फटिक माला– यह बहुत शीतल होती है। वैसे सभी जप इससे किये जा सकते हैं किंतु लक्ष्मी तथा शुक्र ग्रह की कृपा व आर्थिक समृद्धि हेतु इस माला को धारण करते हैं।

मूँगा माला– गणेश जी, माँ लक्ष्मी, हनुमान जी, मंगलदेव की प्रसन्नता के लिए मूंगा माला से जाप किया जाता है।

हकीक माला– इसको अभिमन्त्रित कर यदि पूजा स्थल पर रख दें तो नकारात्मक ऊर्जा नहीं आती। माँ लक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है।

कमलगट्टे की माला– इस माला का अधिक प्रयोग माँ लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। माँ धनदायक यन्त्र व मन्त्र जाप के लिए यह माला सर्वश्रेष्ठ है।

चाँदी की माला– सात्विक व पुष्टि कर्म के लिए शीघ्र फलदायी होती है।

सफेद चंदन माला– मन की शांति हेतु जप व धारण की जा सकती है।

आसन का महत्व

यदि हम कहीं जाते हैं तो हमें बैठने को कुर्सी आदि दी जाती है ताकि हम सुविधा पूर्वक बातकर सकें। इसी तरह किसी आराधना को करने के लिए भी हमें आसन की आवश्यकता होती है ताकि सुविधापूर्वक स्थिति में हमारा मन लगे। दूसरा वैज्ञानिक कारण है कि जब हम कोई जप करते हैं तो हमारा सीधा सम्पर्क पृथ्वी से बनता है। जप से जो ऊर्जा मिलती है वह पृथ्वी में चली जाती है। आसन उसे पृथ्वी में जाने से रोकता है। आसन से दो अभिप्राय हैं - जिस वस्तु को आधार बनाकर बैठा जाय एवं किसी विशेष प्रकार से विशेष स्थिति में बैठा जाय। **ऊनी आसन** - कामना पूर्ति हेतु, सर्वश्रेष्ठ **मृगचर्म आसन**- मोक्ष की कामना सिद्धि, ज्ञान-प्राप्ति, वैराग्य, ब्रह्मचर्य हेतु। **कुशासन**- कुश एक प्रकार की घास से निर्मित आसन जप-तप व आरोग्य हेतु। **रेशमी-आसन**- आर्थिक लाभ हेतु।

तिलक का महत्व

उपासना में तिलक का विशेष महत्व है बिना तिलक के उपासना व्यर्थ है।

तिलक स्थान -

सामान्यत: तिलक भृकुटि के बीच में किया जाता है। किन्तु बारह अलग-अलग स्थानों पर भी तिलक का विधान है। ये बारह स्थान है- ललाट, हृदय-स्थल, कंठ, दोनों बाहु, मूल, नाभि, पीठ और दोनों बगल। गृहस्थ को केवल भृकुटि पर ही तिलक करना चाहिए।

तिलक किस उँगली से करें-

अनामिका से तिलक करने पर शान्ति, मध्यमा से तिलक करने पर आयुवृद्धि, अंगुष्ठ से पुष्टिदायक, तर्जनी से मोक्ष की प्राप्ति, देवकार्य अनामिका से, पितृ कार्य मध्यमा से ऋषिकार्य कनिष्ठ तथा तांत्रिक कार्य प्रथमा उँगली से किया जाता है।

सामग्री से तिलक करें -

पीत चंदन केसर व हल्दी-विष्णु आदि देवताओं के साथ देवगुरु वृहस्पति को, रोली-देवियों व अन्य सभी देवों को अर्पित की जाती है। श्रीहनुमान जी, श्रीगणेशजी को सिन्दूर का चोला अर्पित किया जाता है एवं ऋषियों की पूजा श्वेत चन्दन से करने का विधान है। **पितृ कार्य रक्त चन्दन से किया जाता है।** चन्दन ज्ञान तन्तुओं को शीतलता प्रदान करता है।

कैसे करें नवरात्रि पूजन

नवरात्रि - नवरात्रि में व्रत रखना व पूजा करना हमारे लिए माँ की कृपा का सहज सुगम उपाय है। नवरात्रि व्रत व पूजन की अति सरल विधि हम बता रहे हैं। कुछ प्रतिदिन नौ दिनों तक पाठ करते हैं किन्तु 600 श्लोक होने के कारण एक गृहस्थ के लिए आसान नहीं है। अत: एक सरल शास्त्र सम्मत पूजन-विधि आपको बता रहे हैं।

यदि आप ब्राह्मण के द्वारा घट स्थापन नहीं भी करते हैं तो जिस स्थान पर घट स्थापन करनी हो वहाँ गोबर मिट्टी से लीप कर एक लकड़ी पट्टा रखें। उसके ऊपर लाल रंग का कोरा नया वस्त्र बिछायें। वस्त्र के ऊपर 5 स्थानों पर क्रमश: श्रीगणेश, श्रीमातृका, श्रीलोकपाल, श्रीनवग्रह व श्रीवरुण को ध्यान कर चावल रखें।

3, 4, 5 व 6 स्थान पर क्रमश: सुपाड़ी के रूप में एक बूँद गंगाजल से सभी को स्नान करायें सभी कार्य अनामिका से करें। स्नान के बाद कलावा 2 बार प्रत्येक देव को अर्पित करें। अनामिका पर थोड़ा शहद लेकर भोग लगायें व जल अर्पित करें। सारी बात भावना व श्रद्धा की है यदि आपने भाव से श्रद्धा से आहवान किया है तो अवश्य ही देव उपस्थित होंगे।

अब आप घर के अनुसार इतनी मिट्टी का घट जो आसानी से आ जाय, लायें। उसे न धोयें न हाथ डालें। घट में थोड़ा गंगाजल, थोड़ा साबुत धनिया, पंच-पल्लव (पाँच प्रकार के पत्ते - आम, अशोक, बड़, शमी, पीपल) अथवा केवल आम के पत्ते घट के ऊपर रखकर ढक्कन रखें। घट पर सात बार कलावा लपेटे व रोली से स्वास्तिक बाये से दायें और नीचे से ऊपर बनायें। भक्ति में शक्ति है। नौ दिनों तक भाव से उपासना करने से शक्ति प्रकट होती है। अत: आप 9 नम्बर के स्थान पर थोड़े चावल डालें फिर अपने जीवन साथी का हाथ लगाकर 9 नम्बर पर माता की तस्वीर स्थापित कर दीप जला दें।

यदि आप दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहते हैं तो एक दिन में पूर्ण पाठ कर सकते हैं तो उत्तम है अन्यथा दुर्गा सप्तश्लोकी का 11 बार पाठ कर लें।

अब आप पूर्ण नवरात्रि में कैसे श्रीदुर्गा सप्तशती समाप्त करें। इसमें आपके श्रीसप्तश्लोकी, श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र, श्रीदेव्या कवच अर्गला, कीलकम्, वेदोक्त व तन्त्रोक्त रात्रिसूक्तम्, देव्यर्थ शीर्षम् क्षमा, प्रार्थना, दुर्गाद्वसहस्त्रनाम माला दैव्यापराधक्षमापन स्तोत्रम् व सिद्ध कुंजिका का नियमित पाठ करें। साथ ही सप्तरात के 13 अध्यायों का निम्नवत् पाठ करें। पुस्तक-पूजन व संकल्प प्रथम दिन किन्तु शापोद्धार प्रतिदिन प्रथमा को प्रथम अध्याय, द्वितीया को द्वितीय व तृतीय अध्याय तृतीया को चतुर्थ, चतुर्थी को पंचम, षष्ठम, सप्तम व अष्टम अध्याय यदि आप उपर्युक्त विधि से भी पाठ न कर पायें तो 'सिद्धकुंजिकास्तोत्र का पाठ, अर्गला कीलक व कवच से साथ करने पर दुर्गा सप्तशती पाठ का फल मिलता है।

पंचमी तिथि को नवम व दशम अध्याय, षष्ठी तिथि को एकादश अध्याय, सप्तमी तिथि का द्वादश व गया दशे अध्याय का पाठ करें। ऐसा करने से सम्पूर्ण पाठ का फल मिलेगा।

सप्तवारों की व्रत-विधि

रविवार इस व्रत को सूर्य षष्ठी रविवासरीय अथवा शुक्लपक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करें। कम से कम 12 व्रत अथवा वर्ष पर्यन्त रखें।

फल सभी कामनाओं की पूर्ति विशेषकर- शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र-रोग, चर्म-रोग के निवारण एवं सौभाग्य, आयुवृद्धि के लिए यह व्रत करना चाहिए।

सोमवार ये व्रत श्रावण, चैत्र,वैशाख, कार्तिक व मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्लपक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को 5 वर्ष या 16 सोमवार करें।

फल कन्याओं के लिए योग्य वर हेतु व मत की शान्ति के लिए यह व्रत उपयोगी है।

मंगलवार ये व्रत शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करें। 21 सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति करें। इस व्रत में नमक रहित भोजन करें।

बुधवार इस व्रत का प्रारम्भ शुक्लपक्ष के प्रथम बुधवार से करें। 21 व्रत रखें।

गुरुवार यह व्रत शुक्लपक्ष के प्रथम गुरुवार से करें। 16 गुरुवार अथवा तीन वर्ष तक करें। नमक रहित पीला भोजन करें।

शुक्रवार ये व्रत शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार से करें। विशेष लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार से करें। ये व्रत 21 या 31 बार करें।

फल यह व्रत धन, विवाह, सन्तान आदि सुखों में वृद्धि करता है।

शनिवार यह व्रत शुक्लपक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास के शनिवार से आरम्भ करें। 19 शनिवार तक उद्यापन करके पीपल की पूजा कर कच्चे धागे से वृक्ष की सात बार लपेटें। ब्राह्मण को दान दें। उड़द आदि और तेल से निर्मित पदार्थों को सेवन करें। एक समय नमक रहित भोजन करें।

फल यह व्रत अनिष्ट, अशान्ति, शत्रु-भय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण कर धन-धान्य की वृद्धि और समृद्धि करता है।

एकादशी व्रत : - एकादशी तिथि को मन शक्ति का केन्द्र चन्द्रमा क्षितिज की एकादशवीं कक्षा पर अवस्थित होता है यदि इस अनुकूल समय में मनोविग्रह की साधना की जाये तो वह अवश्य फलवती होती है। इसी वैज्ञानिक आशय से एकादशी तिथि के दिन व्रत-उपवास द्वारा निग्रहीत करने का विधान है। इस व्रत में अन्न का परित्याग करें एवं चावल घर पर न पकायें। स्तुति पाठ, जप, श्रवण एवं मननादि करें।

प्रदोष व्रत :- प्रदोष शिव व्रत है। प्रदोष काल सूर्यास्त के बाद प्रारम्भ होता है। इसमें उस कालावधि तक उपवास रखकर शिव पूजा करके उपवास समाप्त किया जाता है। इस व्रत में फल अथवा पेय पदार्थ ही लें, पकाए फलहार न लें। सूर्यास्त के बाद पूजा करके भोजन लें। वैवाहिक सम्बन्धों में अवरोध होने व संतति कुमार्गी हो, कर्ज से पीड़ित हों, सभी कार्यों से अपशय प्राप्त हो, कोर्ट-कचहरी में उलझे हों तो प्रदोष व्रत काफी हद तक लाभ पहुँचाता है। इस व्रत का प्रारम्भ उत्तरायण से करें। दूसरे दिन विष्णु जी की पूजा अवश्य करें।

सुन्दर-काण्ड

श्रीरामचरितमानस का पंचम सोपान सुन्दरकाण्ड है। इस सोपान में तीन श्लोक, दो छन्द, अट्ठावन चौपाई, साठ दोहे और लगभग 6 हजार दो सौ इकतालीस शब्द हैं। सुन्दर पर्वत पर अशोक वाटिका थी। वहीं श्री हनुमान जी और श्रीसीताजी की भेंट हुई थी; इसलिए इस काण्ड का नाम सुन्दरकाण्ड है।

श्री हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए विधिवत् नियमपूर्वक सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। किसी व्यक्ति के जीवन में ज्यादा परेशानियाँ हों, कोई काम नहीं बन रहा हो या आत्मविश्वास की कमी हो जाय या कोई अन्य समस्या हो तो सुन्दरकाण्ड पाठ से शुभ फल प्राप्त होने लग जाते हैं। मानसिक शान्ति प्राप्त होती है, आत्मविश्वास और इच्छा शक्ति बढ़ती है। श्रीहनुमान जी अतिशीघ्र प्रसन्न होने वाले देवता है। चालीसा सप्ताह तक पाठ करने से मनोरथपूर्ण होते हैं। विशेष फल की प्राप्ति हेतु दीपक जलाकर मंगलवार या शनिवार से पाठ आरम्भ करें।

श्री सीताराम एवं श्रीहनुमान जी की मूर्तियाँ या चित्रपट स्थापित कर स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हुए गुरु व पितृ का स्मरण करते हुए सुन्दरकाण्ड के पाठ से पूर्व गणेश वन्दना करें। इससे पूर्व श्रीरामचरितमानस की भी वन्दना करें, पुष्प या माला चढ़ायें। सुन्दरकाण्ड पूर्ण होने पर भोग लगायें। यदि घर में श्रीरामचरितमानस पाठ रखें तो सुन्दरकाण्ड घर का कोई व्यक्ति ही करें। यह पाठ घर के ऊपर मडरा रहे अशुभ फल से छुटकारा दिलाता है; ऋण एवं चिन्ता मुक्त करता है। इसके पाठ से हनुमान जी की ही नहीं अपितु श्रीरामजी की भी कृपा बनी रहती है।

चमत्कारी मंगल

मंगल ग्रह के 21 नाम हैं। जीवन के हर क्षेत्र में मंगलकारी परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन अथवा शनिवार और मंगलवार को विशेष रूप से मंगल देवता के निम्न नामों के उच्चारण से सभी कष्टों से छुटकारा एवं समस्याओं से जूझने की शक्ति मिलती है। संभव हो तो मंगल के निम्न नामों के उच्चारण के साथ मंगलयन्त्र का रोली-चावल से पूजन करते रहे :-

(1) मंगल	(2) भूमिपुत्र	(3) ऋणहर्ता	(4) धनप्रदा
(5) स्थिरासन	(6) महाकाय	(7) सर्वकामार्थ साधक	(8) लोहित
(9) लोहिताक्ष	(10) सामगानंकृपाकर	(11) धरात्मज	(12) कुज्जा
(13) भूमिजा	(14) भूमिनन्दन	(15) अंगारक	(16) भौम
(17) यम	(18) सर्वरोगहारक	(19) वृष्टिकर्ता	(20) पापहर्त्ता

(21) सर्वकामफलदाता

ये नाम मंगल के स्वभाव को उजागर करते हैं और मंगली लोगों के लिए विशेष फलदायक हैं।

तुलसी का महात्म्य

तुलसी अति प्राचीन व कल्याणकारी है। जिस घर में तुलसी हो वह तीर्थ सदृश हो जाता है। तुलसी की गंध लेकर वायु जिस दिशा में जाती है वह दिशा तथा वहाँ रहने वाले सभी प्राणी पवित्र हो जाते हैं। तुलसी का पौधा जहाँ होता है वहाँ ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि समस्त देवताओं का निवास होता है। तुसली के पूजन से समस्त देवताओं के पूजन-अर्चन का फल मिलता है। तुसली सौभाग्यदायक व विपत्तिनाशक है। तुलसी के संयोगपूर्वक किया गया दान अपार फलदायी होता है। तुलसी महारानी के पास सायंकाल दीपक प्रज्ज्वलित करने से अनेक कष्टों का निवारण होता है।

तुलसी का एक-एक पत्ता न चुनकर मंजरी दल सहित अग्र भाग चुनें। मंजरी का माहात्म्य सब पुष्पों से बढ़कर है। मंजरी चुनते समय पत्तियों का रहना आवश्यक है। तुलसी दल मंगल, शुक्र और रवि, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा व सूतक-पातक में न चुने। किन्तु पौधे से गिरा हुआ तुलसी-पत्र कभी भी ले सकते हैं। बिना स्नान के व जूता पहिन कर, सन्ध्या समय अथवा रात्रि में तुलसी दल कदापि न तोड़े।

नामकरण

नामों के बारे एक महत्वपूर्ण संकेत यह है कि जिस नाम से बालक या बालिका को पुकारा जाता है, उस नाम के ऐतिहासिक या पौराणिक व्यक्ति के गुण-धर्म अनजाने ही संतति में प्रविष्ट हो जाते हैं। संतति की जन्मकुंडली, योग, जन्म-नक्षत्र व ग्रह स्थिति- इन सबके अनुकूल विशिष्ट आद्याक्षरों का चयन करें। विशेषकर, अ, न, ज, म, प इन आद्याक्षरों के नाम रखते समय देवताओं की सलाह लें। लड़कों का नाम सम अक्षरों (2,4,6,8) तथा लड़कियों का नाम विषम (3,5,7,9) अक्षरों का रखें। नाम द्वयर्थक न रखें। एक ही अर्थ वाले नाम रखें।

यदि नामकरण के लिए पुरोहित उपलब्ध न हो तो तो सुवर्ण मुद्रिका से गणेश, इष्ट-देवता कुल-देवता, ग्राम-देवता के नाम लिखकर अपनी संतति के कान में तीन बार उसका नाम उच्चारण करें। साथ कोई मंत्र न मालूम हो तो गणेशजी का ध्यान करें।

प्रदक्षिणा

कुछ देवता दर्शन प्रधान व कुछ देवता प्रदक्षिणा प्रधान होते हैं। शरीर द्वारा परिश्रम करके प्रदिक्षणा करने पर शरीर, इन्द्रिय और मन पर देवता के सूक्ष्म परिणाम होते हैं- देह, बुद्धि एवं चित्त के विकार दूर करने के लिए प्रदक्षिणा अप्रतिम साधन है। प्रतिक्षणा से जो परिक्षण होता है उससे शरीर शुद्धि, वाणी द्वारा जप करने से वाचा शुद्धि एवं प्रदक्षिणा करते समय विचारों का प्रवाह कम रहने से चित्त शुद्ध हो जाता है। दायां अंग देवता की ओर रखकर मंद-गति से प्रदक्षिणा करें। कहा गया है-

यानि यानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि-तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

सनातन धर्म में पत्तों का महत्व

हिन्दू धर्म में कुछ विशेष पत्तों का बड़ा महत्व है। जिन्हें शुभ और पवित्र मानकर पूजा में उपयोग किया जाता है। कुछ ऐसे ही विशेष पत्र हैं :-

1. **तुलसी-पत्र :-** तुलसी भगवान विष्णु को अत्यन्त प्रिय है। भगवान के भोग में तुलसी का पत्ता डालने पर ही प्रभु ग्रहण करते हैं। दूषित पानी में तुलसी की पत्तियाँ डालने पर यह शुद्ध हो जाता है। तुलसी शाम को नहीं तोड़नी चाहिए।

2. **विल्व-पत्र :-** हिन्दू धर्म में विल्व पत्र का बड़ा महत्व है व शिव को अति प्रिय है। शिव को विल्व पत्र चढ़ाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। यह त्रिदोष नाशक व त्वचा तथा मधुमेह में भी उपयोगी है। विल्वपत्र का दर्शन शुभ है।

3. **पान का पत्ता :-** पान को ताम्बूल भी कहते हैं। यह पूजा में भी बहुत प्रयोग होता है। इसे पवित्र मानते हैं और पवित्रता के साथ प्रयोग करते हैं।

4. **केले के पत्ते :-** केले का पत्ता धार्मिक कार्यों में प्रयुक्त होता है। भगवान विष्णु व देवी लक्ष्मी को केले का भोग लगाते हैं। समृद्धि के लिए इसकी पूजा श्रेयस्कर है। नेत्रदोष में हितकारी है।

5. **आम के पत्र :-** अकसर मांगलिक कार्यों में प्रयुक्त होते हैं। मण्डप, कलश, द्वार सजाने में, तोरण व बांस के खम्भे में इसका प्रयोग किया जाता है। घर के मुख्य द्वार पर लगाने से सकारात्मक ऊर्जा घर में आती है। इसकी लकड़ियों का उपयोग समिधा के रूप में प्रयोग किया जाता है।

6. **सोम-पत्र :-** सोम पत्र प्राचीन काल में देवी-देवताओं को अर्पित की जाती थी, वर्तमान में यह दुर्लभ है। यह न तो मांग है न नशे की पत्तियाँ। सोमलता पर्वत शृंखला में पायी जाती है।

7. **शमी के पत्ते :-** दशहरे पर सोने-चाँदी के रूप में बाँटी जाने वाली शमी की पत्तियाँ जिन्हें सफेद कीकर भी कहते हैं। आयुर्वेद की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। बुधवार को गणेश जी को शमीपत्र अर्पित करने से तीक्ष्ण बुद्धि व कलह का नाश होता है।

8. **पीपल-पत्र :-** पीपल के पत्तों का हिन्दू धर्म में बड़ा महत्व है। पीपल में भगवान विष्णु का निवास है। शनिवार को पीपल के नीचे दीपक जलाने से समृद्धि आती है।

9. **बड़ के पत्र :-** आटे का दीपक बनाकर बड़े के पत्तों पर रखकर हनुमान जी के मंदिर में रखने से कर्ज से मुक्ति मिलती है। यह बहुत पवित्र माना जाता है।

10. **आँकड़े के पत्ते :-** इन पत्रों पर श्री राम लिखकर हनुमान जी को अर्पित करते हैं। शिव जी को यह पत्ते ॐ लिखकर चढ़ाने से धन की कमी नहीं होती।

कार्तिक मास या दामोदर मास का महत्व

सनातन धर्म में कार्तिक मास का विशेष महत्व है। कार्तिक मास में किये गये भजन यज्ञ अनुष्ठान का फल सौ गुना होता है। यह मास सांसारिक दृष्टि से सम्बन्धों का मास भी है। इसमें पति-पत्नी, माँ व सन्तान, भाई-बहिन सभी सम्बन्धों को दृढ़ता प्रदान करने वाले पर्व विशेष जैसे करवाचौथ, अहोई अष्टमी व भाई दूज भी है। सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से उत्तम मास है। इस मास में व्रत करना, जप करना, दीपदान करना आदि विशेष फलदायी है। कार्तिक मास में वैष्णव सेवा तुलसी सेवा का विशेष महत्व है। प्रतिदिन दीपदान, तुलसी परिक्रमा, देव परिक्रमा व धाम परिक्रमा का बड़ा महत्व है। श्रद्धा भक्ति शुचिता के साथ किये गये भजन-पूजन सहस्त्र गुना फलदायी है। भगवान दामोदर को यह मास विशेष प्रिय है।

रोगापहं पातक नाशकृत्परं,
सहृद्धिदं पुत्र धनादि साधनम्।
मुक्तेनिदानं नहि कार्तिकव्रतद,
विष्णुप्रियादन्यदिहास्ति भूतले।।

अर्थात् कार्तिक मास आरोग्य प्रदान करने वाला रोगविनाशक, सद्बुद्धि प्रदान करने वाला तथा प्रभु साधना के लिए सर्वोत्तम है। यह मास आरोग्य देवता धन्वन्तरि, आयु के देव यम, मुक्ति के देव विष्णु, श्रीं की देवी लक्ष्मी, रिद्धि-सिद्धि और बुद्धि के देवता गणेश, चौरासी कोटि देव-देवताओं को धारण करने वाली गऊमाता एवं समस्त देवी-देवताओं के आराधन का मास है।

मासानो कार्तिक श्रेष्ठो देवानाम् माधुसूदनः।
तीर्व नारायणारव्य हि त्रि तयं दुर्लभ कलौ।।

चारों पुरुषार्थों का प्रदाता यह मास भगवान विष्णु के समान दुर्लभ है।

द्वादश ज्योर्तिलिंग

सभी द्वादश ज्योर्तिलिंग हैं - सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, वैद्यनाथ, भीमाशंकर, रामेश्वर, नागेश्वर, विश्वनाथ, त्र्यम्बकेश्वर, केदारनाथ्ज्ञ और घृष्णेश्वर -

सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं, ओङ्कारममलेश्वरम्।।
परल्यां वैद्यनाथं च, डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबंधे तु रामेशं, नागेशं दारुकावने।।

इस मंत्र का जाप प्रतिदिन करें। इन ज्योर्तिलिंगों के दर्शन मात्र से समस्त पाप नष्ट होते हैं व सारे संकटों से मुक्ति मिलती है। व्यक्ति के दुर्भाग्य नष्ट हो जाते हैं।

हनुमान जी के द्वादश नाम

हनुमान जी के विशेष बारह नाम है - हनुमान, अंजनीसुत, वायुपुत्र, महाबल, रामेष्ट, फाल्गुनसख, पिगांक्ष, अमितविक्रम, उदधिक्रमण, सीताशोकनाशक, लक्ष्मण प्राणदाता, दशग्रीवदर्पहा।

1. प्रात:काल और सोते समय इन्हें स्मरण करें।
2. किसी नए काम के आरम्भ में स्मरण करें।
3. पीले कागज पर लाल रंग से लिखकर घर के मुख्य द्वार पर लगायें।
4. भोजपत्र में अष्टगंध से लिखे।

उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब, करैं सब काम सफल हनुमान।।

मंगलवार और शनिवार को हनुमान अपने भक्तों पर विशेष कृपा करते हैं।

विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा

'प्राण' का अर्थ है जीवन जबकि 'प्रतिष्ठा' का अर्थ है स्थापना। ऐसे में प्राण-प्रतिष्ठा का अर्थ है प्राण-शक्ति की स्थापना या देवता को जीवंत स्थापित करना। यह एक पवित्र अनुष्ठान है।

शास्त्रानुसार जब किसी प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है तो वह देवता में बदल जाती है। देवता का आहवान करते हैं कि वे मूर्ति में विराजमान हों। कोई साधारण पत्थर भी प्राण-प्रतिष्ठित होकर फलदायक हो जाता है। यह एक विशिष्ट प्रक्रिया है। पानी वायु और प्रकाश की तरह परमात्म तत्व भी सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। उसे धनीभूत कर किसी माध्यम विशेष में स्थापित करना। सर्वप्रथम मूर्तियों को स्नान कराया जाता है चूँकि मूर्ति बनाते समय कैसे-कैसे स्थान और व्यक्तियों के सम्पर्क में रहना पड़ता है उसमें सन्निहित अवांछनीय संस्कारों को हटाकर वांछनीय संस्कारों की स्थापना के लिए दश क्रम होते हैं। प्रथम चार स्नान, भस्म, मिट्टी, गोबर व गोमूत्र से होते हैं फिर दूध, दही, घी, शहद व जल से स्नान कराया जाता है। मूर्ति के नेत्र बन्द किये जाते हैं फिर मन्त्रोच्चारण किया जाता है फिर उनकी पट्टी खोली जाती है।

तिलक

तिलक भारत में किसी भी शुभ मुहूर्त से पूर्व माथे पर लगाये जाने वाले चिन्ह है। यह बहुत ही शुभ और पवित्र कार्य है। ऐसा मानते हैं कि व्यक्ति के शरीर में सात प्रकार के ऊर्जा केन्द्र हैं। इन्हें चक्र भी कहते हैं, मस्तिष्क के केन्द्र में जहाँ तिलक लगाते हैं वहाँ गुरु चक्र स्थापित होता है। तिलक के माध्यम से हम उन्हें सम्मान देते हैं वो हमें मानसिक शान्ति और आशीर्वाद देते हैं। हिन्दू धर्म में रोली, हल्दी, चन्दन या कुमकुम से तिलक लगाते हैं।

तिलक के बारह स्थान है- ललाट, हृदयस्थल, कंठ, दोनों बाहु, मूल, नाभि, पीठ और दोष बगल। गृहस्थ को केवल मस्तक पर तिलक लगाना चाहिए।

अनामिका से तिलक करने पर शांति, मध्यमासे से तिलक करने पर आयुवृद्धि, अंगुष्ठ से पुष्टिदायक, तर्जनी से मोक्ष प्राप्ति देवकार्य अनामिका से पितृकार्य मध्यमा से कनिष्ठा से ऋषिकार्य तथा तांत्रिक कार्य प्रथमा उंगली से।

आरती क्यों और कैसे?

आरती पूजन के अन्त में अपने इष्ट को प्रसन्न करने के लिये की जाती है। दीप बत्तियाँ लगाकर उनका गुणगान स्तवन किया जाता है। उनका एक-एक अंग आलोकित हो जाय हम अपने इष्ट के नयनाभिराम दर्शन कर सकें। आरती का अर्थ बलिहारी भी है।

किसी स्वास्तिकादि मांगलिक चिन्हों से अलंकृत तथा पुष्प अक्षतादि से सुसज्जित थाली में कपूर अथवा घृत की बत्ती को प्रज्ज्वलित कर घण्टा नाद करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर भगवान की मंगलमय आरती करें।

आरती का मुख्य विधान है, सर्वप्रथम चरणों में चार बार, नाभि में दो बार, मुख में एक बार आरती के बाद पुनः समस्त अंगों की सातबार आरती करें, फिर शंख में जल लेकर भगवान के चारों आरे घुमायें।

अचूक उपाय : यदि किसी के विवाह में देरी हो रही हो

21 विल्व पत्रों को काले तिल मिश्रित दही में डालकर एक-एक विल्व पत्र ॐ नमः शिवाय बोलकर शिवजी की पूजा करने के पश्चात् चढ़ायें। यह प्रयोग शुक्लपक्ष के सोमवार से आरम्भ करें। ऐसा 41 दिन तक करें। भगवान् आशुतोष अवश्य ही कृपा करेंगे।

धर्म क्या है?

सभी लोग धर्म तो करते हैं किन्तु धर्म क्या है? इस पर विचार नहीं करते। मनमाना धर्म जिससे स्वार्थ सिद्ध हो, उसी को धर्म कह देने की ही प्रवृत्ति है जीव की। धर्म वह है जो हमारे अन्दर विद्यमान मानवता को प्रकट कर दे, उसे ही धर्म कहते हैं।

धर्म (दया, सत्य, तप, दान) ही है। अतः भगवान को पाने के लिए धार्मिक बनना है, तो वैराग्य की आवश्यकता है। लोभ से वैराग्य के लिए दान करना। भोग से वैराग्य के लिए तप करना। झूठ से वैराग्य के लिए सत्य बोलना और कठोरता से वैराग्य के लिए दया करना अति आवश्यक है। वैराग्य महत्वपूर्ण है।

मनु महाराज धर्म के दस लक्षण बताते हुए कहते हैं कि –

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। (मनुस्मृति)

(1) **धृतिः** सुख दुःख, हानि-लाभ्ज्ञ, मान-अपमान में धैर्य रखना।

(2) **क्षमाः** निर्बलो पर दया करना व सामर्थ्य होने पर भी दोषी द्वारा पश्चाताप करनेपर दण्ड न देना।

(3) **दमः** मन में अच्छी बातों का चिंतन करना, मन को वश में रखना।

(4) **अस्तेयः** बिना आज्ञा किसी दूसरे की वस्तु का प्रयोग न करना।

(5) **शौचः** मन वाणी शरीर व वातावरण को शुद्ध रखना।

(6) **इन्द्रियनिग्रहः** हाथ, पांव, आँख, मुख, नाक आदि को अच्छे कार्यों में लगाना।

(7) **धीः** हर काम बुद्धिपूर्वक करना व बुद्धि बढ़ाने हेतु प्राणायाम, सात्विक भोजन, प्रार्थना आदि करना।

(8) **विद्याः** ईश्वर बनाये गए प्रत्येक पदार्थ का ज्ञान प्राप्त करना तथा उनसे उपयोग लेना। शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म व शुद्ध उपासना को जानना।

(9) **सत्यः** सदैव सत्य व प्रिय बोलना, जो हम जानते हैं उसको वैसा ही अपने द्वारा कहना सत्य कहाता है।

(10) **अक्रोधः** इच्छा विघात से उत्पन्न क्रोध का त्याग करना।

सफलता प्राप्ति के उपाय

सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य को रोजी- रोजगार करना पड़ता है। इसके लिए जहाँ अनेक लोग अपना व्यापार तथा व्यवसाय करते हैं वहीं अन्य व्यक्ति नौकरी आदि से जुड़े रहते हैं। ऐसे में अनेक प्रकार की कार्य बाधाऐं उपस्थित हो जाती हैं जिनका कभी-कभी कोई समाधान दिखाई नहीं देता। इसके अलावा घर परिवार के कार्यों में भी प्राय: बाधाऐं उत्पन्न होती रहती हैं। इस प्रकार की समस्त बाधाओं के निवारण में कार्यबाधा नाशक प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं।

- ★ नित्य प्रात: काल स्नानादि से निवृत्त होकर गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करने से कार्यों में आने वाली सभी बाधाएं नष्ट हो जाती हैं।
- ★ गीता के ग्यारहवें अध्याय के 36वें श्लोक को लाल स्याही से लिखकर घर में टांग दें। सभी प्रकार की बाधा दूर हो जायेगी।
- ★ अपने दिन का आरम्भ करते समय जब आप बाहर निकलें तो पहले दायां पांव बाहर निकालें। आपके बांछित कार्यों में कोई बाधा नहीं आयेगी।
- ★ घर से निकलते समय कोई मीठा पदार्थ - गुड़, शक्कर, मिठाई, या शक्कर मिला दही खा लें। कार्यों की बाधा दूर हो जायेगी।
- ★ तुलसी के तीन-चार पत्तों को ग्रहण करके बाहर जाने पर भी कार्यों की सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं।
- ★ अगर बार-बार कार्यों में बाधा आ रही हो तो अपने घर में श्यामा तुलसी का पौधों लगाएं। संध्याकाल तुलसी के पास शुद्ध घी का दीपक जलाएं। बाधा से छुटकारा मिल जायेगा।
- ★ 5 बत्तियों का दीपक हनुमान जी के मन्दिर में जला आएं। इससे आपकी सभी प्रकार की बाधाएं और परेशानियां दूर हो जाएंगी।
- ★ प्रात: काल भगवती दुर्गा को पांच लाल पुष्प चढ़ाएं। आपके कार्यों की सभी बाधाएं समाप्त हो जाएंगी।
- ★ किसी कार्य की बाधा दूर करने के लिए प्रात:काल सीता एवं हनुमान जी के मन्दिर जाएं। सबसे पहले हनुमाान जी के दर्शन करें। उनकी प्रतिमा से अपनी उंगली पर थोड़ा सा सिंदूर लेकर सीता जी के सामने अपनी समस्या कहें। फिर वह सिंदूर उनके चरणों पर लगा दें। लाभ होगा।
- ★ कार्यों की बाधाएं दूर करने के लिए मंगलवार के दिन मिट्टी के पात्र में शुद्ध शहद भरकर उसे किसी एकान्त स्थान पर चुपचाप रख आएं। यह उपाय करने से भी सभी प्रकार की कार्य बाधाएं दूर हो जाएंगी।

।।वास्तु।। - एक दृष्टि में।।

साधारणत: वास्तु विज्ञान को किसी पुस्तक या लेख में समा देना लगभग असम्भव है। अपितु इस लेख के माध्यम से ये बताने का प्रयास अवश्य किया गया है कि अपने घर और व्यापारिक स्थल में क्या सावधानी बरत सकते हैं।

घर में :-

1. पूर्वोत्तर (N/E) में शौचालय अथवा रसोई न हों।
2. पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण-पश्चिम (S/W) में न हो।
3. प्रमुख द्वार दक्षिण-पश्चिम (S/W) में न हो।
4. प्रधान शयनकक्ष दक्षिण-पश्चिम (S/W) तथा पूर्वोत्तर में न हो
5. प्रधान शयनकक्ष दक्षिण-पश्चिम (S/W) में अथवा दक्षिण (S) में हो।
6. रसोई घर अग्नि कोण (S/W) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।
7. देव स्थान पूर्वोत्तर (N/E) अथवा पूर्व (East) में हो।
8. सीढ़ियां घड़ी नुमा (clock wise) हो।
9. सारे प्रमुख द्वार (clock wise) खुलें।
10. घर का प्रमुख द्वार उत्तर (N) या पूर्व (E) में हो।
11. शौचालय वायव्य कोण (N/W) में या पश्चिम (W) में हो।
12. जल, स्थान, बोरिंग पूर्वोत्तर (N/E) में हो।
13. ओवर हेड टंकी दक्षिण-पश्चिम (S/W) में हो।
14. बहुमूल्य वस्तुऐं घर में दक्षिण-पश्चिम (S/W) में अलमारी अथवा तिजोरी में रखें।
15. सोते समय सिरहाना उत्तर (N) में कदापि न हो।

व्यावसायिक स्थल:-

1. पूर्वाभिमुख व उत्तराभिमुख अर्थात् North facing & East facing द्वार ज्यादा उपयोगी है।
2. प्रधान (Head) के बैठने का स्थान दक्षिण पश्चिम (S/W) में होना चाहिए।
3. प्रयास रखें कि सारे कार्यकर्त्ता पूर्व (East) और उत्तर (North) की ओर मुँह करके बैठें।
4. नगदी हमेशा दक्षिण पश्चिम (S/W) में रखे।
5. बीम के नीचे न बैठें तथा यदि बीम हो तो False Ceilling करा लें।
6. प्रयास रखें कि दक्षिण पश्चिम (S/W) थोड़ा ऊँचा हो।
7. व्यावसायिक स्थल के आगे कोई बड़ा पेड़ न हो।
8. व्यावसायिक स्थल का पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण-पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
9. मुनीम एवं प्रबंधक इत्यादि पश्चिम में या दक्षिण में बैंठे।
10. किसी भी हालत में शौचालय पूर्वोत्तर (N/E) में न हो (ये देव स्थान है)।
11. पीने का पानी पूर्वोत्तर में रखें एवं पैन्ट्री अग्नि कोण अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।

उपरोक्त बातों से अनेकों अनेक पहलू अभी भी रह गये हैं। जब भी किसी नये घर या व्यावसायिक स्थल का चुनाव करना हो तो उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भी विशेषज्ञ की सललाह अत्यन्त आवश्यक है।

अंग फड़कने के फल

फड़कने वाले अंग	फल
सिर पीछे की ओर	आशायें पूर्ण हों
सिर पूरा	यात्रा होना सम्भव
दाहिना मत्था	सफर व तकलीक संभव
बांया मत्था	खुशी होगी
दाहिनी आँख	अच्छा है खुशी होगी
बांई आँख	स्त्री से दु:ख या वियोग
दाहिनी पलक	खुशी हो
बांई पलक	दु:ख या करूट मिलना
दांई आँख के नीचे	सम्मान मिले
बांई आँख के नीचे	धन का व्यय
दाहिना गाल	लाभ
बायां गाल	व्यय और हानि
दाहिनी भौंह	आदर व धन मिले
बांई भौंह	प्रसन्नता व पुत्र सुख हो
दाहिना कान	पद बढ़े
बांया कान	परेशानी होगी
नाक फड़के	प्रसन्नता हो
गर्दन फड़के	लाभ, स्त्री मिले
ऊपर का होठ	पद बढ़े
आँख के नीचे पलक	प्रेमी मिले
दाहिना कन्धा	चिन्ता हो
बायां कन्धा	शत्रु पर विजय हो
माथे पर	धनवान होगा
दाहिनी बाजू	अच्छा है लाभ होगा
दाहिनी बगल	राज होगा
बांया बाजू	ऐश्वर्य घटे
बांयी बगल	ऐश्वर्य घटे
दाहिनी हाथ	प्रतिष्ठा होना सम्भव
बांया हाथ	वियोग होना सम्भव
दाहिनी हथेली	लाभ होगा

अंग पर तिलों के फल

तिल वाले अंग	फल
माथे में सीधी तरफ	माल खूब बढें
माथे में उल्ठी तरफ	परेशानी से उमर कटे
ठुड्डी पर	स्त्री से मेल न रहेगा
दोनों भौंहो पर	यात्रा होती रहेगी
सीधी आँख पर	स्त्री से प्रेम रहेगा
बायीं आँख पर	चिन्ता बनी रहेगी
दाहिने गाल पर	धनवान होगा
बायें गाल पर	निर्धन रहेगा
होंठ पर	कामी होगा
कान पर	अल्पायु होगा
गर्दन पर	आराम मिलेगा
सीधी भुजा पर	आदर मिलेगा
बांई भुजा पर	लड़का होगा
नाक पर	यात्रा होती रहेगी
दाहिनी छाती पर	स्त्री से प्रेम रहे
बांई छाती पर	स्त्री से लड़ाई रहे
कमर पर	परेशानी में जीवन बीते
बगल में	ग्रन्थ हानि पहुँचावे
दाहिनी छाती पर	परेशान न रहे
बांई छाती पर	कर्मी होगा
छातियों के बीच	आराम से निर्वाह हो
हृदय पर	बुद्धिमान होगा
पसली पर	भीरू न होगा
पेट के बीच में	भीरू होगा
पीठ पर	यात्रा करता रहेगा
दाहिनी हथेली पर	धनवान हो
दाहिने हाथ पर	कोष वाला हो
बांई हथेली पर	व्यर्थ वाला हो
दाहिने पैर में	बहुत बुद्धिमान हो
बांये पैर में	व्यय अधिक करे
पाँव के तलवे में	प्राय: यात्रा में रहे

स्वप्न - शकुन का शुभाशुभ फल विचार

स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन, लाभ, प्रसन्नता
आम वृक्ष देखना	सन्तान सुख
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति
आकाश से गिरान	मानहानि
अर्थी देखना	रोग मुक्त
अग्नि देखना	पित्त संबंधी रोग
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि
आग पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो
आत्महत्या करना	दीर्घायु
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह
अस्त्र शस्त्र	दु:खों से निपटारा
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख
इम्तहान में फेल	शुभ लाभ, तरक्की
ईजन देखना	योजनाएँ असफल
इमली खाना	पुत्र प्राप्ति
इन्द्रधनुष	जीवन में परिवर्तन
उल्लू देखना	रोग, शोक हो
उल्टा देखना	अपमान मिले
ऊँचाई पर चढना	तरक्की व मान
ऐनक देखना (काली)	निराशा
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद
कौआ बोलते	बुरा समाचार
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो
काला नाग	राज्य सम्मान
किला देखना	तरक्की पाना
कोढी देखना	रोग सूचक
कन्या देखना	व्यर्थ का झगड़ा
कीचड़ में फँसना	कष्ट, व्यय हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी
कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो
कढाई करते	व्यापार सफलता
कवाब खाना	अपयश, विवाद
कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि
खून करना	संकट आना
खिलौना देखना	सुख शान्ति
खेत देखना	संकट पूर्ण
खरगोश देखना	स्त्री मिलाप
गुरू देखना	कार्य सफलता
गोबर देखना	पशु लाभ हो
गंगा देखना	शेष जीवन सुखी
ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता
गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण
गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो
गरीबी देखना	सुख समृद्धि
गर्भपात	गंभीर रोग
घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता
घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा
घायल देखाना	संकट से मुक्त होना
स्वप्न	फल
घर बनाना	प्रसिद्धि
घड़ी देखना	यात्रा का संकेत
घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक
चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ
चावल खाना	शुभ समाचार
चोर देखना	धन प्राप्ति
चांदी के जेवर	संबंध विच्छेद
चौकीदार	धनागमन का संकेत
चीखें मारना	परेशानी व कष्ट
चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक
छुरी मारना	परिवार में विवाद
छिपकली	अचानक धन लाभ
छींकना	कार्य बाधा
खाना देखना	चिन्ताओं से छुटकारा
छंटनी देखना	पदोन्नति
जख्म देखना	परेशानियाँ
जादूगर देखना	अशुभ लक्षण
जहाज देखना	परेशानियाँ
जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति
जल देखना	मान सम्मान
ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक
जुआ खेलना	धन हानि
जेब काटना	धनहानि
जनाजा देखना	धन लाभ तरक्की
झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले
झाड़ू देखना	नुकासान हो
क्षण्डा देखना	सुयश सूचक
झरना देखना	दु:ख दूर हो
ठाट देखना	सम्मान जनक स्थिति
टेलीफोन करना	शुभ समाचार
टूप देखना	संकट लक्षण
टोपी देखना	प्रगति हो
ठग मिलना	धन हानि

स्वप्न	फल
तोता देखना	धन लाभ
तलाक होते देखना	दाम्पत्य बाधा
तरक्की देखना	योजना सफलता
तराजू देखना	व्यापार लाभ
ताश खेलना	व्यापार लाभ
बन्द ताला	कार्यों में रूकावट
तरबूज देखना	परेशानी
थूक देना	परेशानी बढ़े
थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
थप्पड़ खाना	शुभ
दूध पीना	खुशी प्राप्ति
दरबाजा बन्द देखना	परेशानियाँ हो
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
गिरते दाँत	दुःख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढे
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान भरी देखना	धन प्राप्त
दुकानखाली देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्रप्ति
दरिया में नहाना	रोग नाश
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्रप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुंआ देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति लाभ हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आंकाक्षा पूर्ति
नव यौवना	प्रेम सम्बंध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	अशुभ होना
पशु देखना	व्यापार में लाभ
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय संबंध	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्यवर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फब्बारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा
बूढ़ी स्त्री देखना	दुः ख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वरद विवाद
भूखा देखना स्वयं को	यात्रा लाभ
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुरादपूरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हँसते	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गुहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञा देखना	सौभाग्य सूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यम देखना	आयु में वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रागी देखना	दुःख निवृत्ति
रसोई घर	धन धान्य का प्रतीक
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना	अकारण वाद विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य वृद्धि
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढे
वृक्ष काटना	धन हानि

आरती

आरती के पांच अंग होते हैं। प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तों से और पाँचवें साष्टांग दण्डवत् से आरती करें। आरती उतारते समय सर्व प्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार घुमायें, दो बार नाभि देश में, एक बार मुख मण्डल पर और सात बार समस्त अंगों पर घुमायें। यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्टदेव की प्रसन्नता के हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा कीर्तन करना चाहिए।

आरती को 'आरात्रिक' या 'नीराजन' भी कहा जाता है। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। कुमकुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दन की सात या पाँच बत्तियाँ अथवा दीये (रूई और घी) की बत्तियों से शंख घण्टा बजाते हुये आरती करनी चाहिए।

अनेक दीप बत्तियों को जलाकर विग्रह के चारों ओर घुमाने का अभिप्राय यही है कि विग्रह पूरा का पूरा प्रकाशित हो उठे, चमक उठे। अंग-प्रत्यंग स्पष्ट रूप से उद्भाषित उपासक देवता का रूप निहार सकें या हृदयंगम कर सकें। आरती का अर्थ इष्ट की बलैया लेना भी है।

साधारणत: पाँच बत्तियों से आरती की जाती है, इसे पंचप्रदीप भी कहते हैं। किसी स्वतिकादि मांगलिक चिह्नों से अलंकृत तथा पुष्प अक्षतादि से सुसज्जित थाली में एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियाँ प्रज्ज्वलित कर आरती की जाती है। कुंकुम, अगर, कपूर, चन्दन, रुई और घी, धूप की एक, पाँच या सात बत्तियाँ बनाकर शंख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिए। फिर शंख या पात्र में जल लेकर इष्टदेव के चारों ओर घुमायें।

श्रीगणेश जी की आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता तेरी पार्वती, पिता महादेवा॥
एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
माथे पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िया को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।
हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
मोदक को भोग लगे सन्त करे सेवा।
दीनन की लाज रखो, शम्भु पुत्र वारी।
मनोरथ को पूरा करो, जायें बलिहारी॥

श्रीजगदीश जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ ॐ जय ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मनका। सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ॐ जय ॥
माता पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किस की।तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किस की॥ ॐ जय ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ जय ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।मैं मूरख खलकामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ जय ॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति।किस विधि मिलूँ कृपामय, तुमको मैं कुमति॥ ॐ जय ॥
दीन-बन्धु दुख हर्ता, ठाकुर तुम मेरे।अपने हाथ उठावो, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय ॥
विषय विकार मिटावो, पाप हरो देवा।श्रद्धा-भक्ति बढ़ावो, सन्तन पद सेवा॥ ॐ जय ॥

श्रीलक्ष्मीजी की आरती

जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥ ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी रुद्राणी तू ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ॐ॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धिसिद्धि धन पाता॥ॐ॥
तुम पाताल निवासिनी, तू ही है शुभदाता। कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥ॐ॥
जिस घर तुम रहती हो, सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न होई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुम से आता॥ॐ॥
शुभ गुण मन्दिर, सुन्दर क्षीरोदधि जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता॥ॐ॥
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ॐ॥

श्रीशंकर जी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा। ब्रह्मा, विष्णु, सदा शिव, अर्द्धांगी धारा॥ ॐ॥
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे, हंसासन गरुडासन, वृषवाहन साजे॥ॐ॥
दो भुज चार चतुर्भुज, दसभुज अति सोहे। तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे॥ॐ॥
अक्षमाला, वनमाला मुण्डमाला धारी। चन्दन मृगमद सोहे भोले शुभकारी॥ॐ॥
श्वेताम्बर, पीताम्बर बाघम्बर अंगे। सनकादिक ब्रह्मादिक प्रेतादिक संगे॥ॐ॥
करके मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता। जगकर्ता संहर्ता जग पालन कर्ता॥ॐ॥
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षर के मध्ये, तीनों की एका॥ॐ॥
त्रिगुण स्वामीजी की आरती जो कोई जन गावे। कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥ॐ॥

श्रीअम्बा जी की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥1॥ जय माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को॥ उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको॥2॥ जय कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै। रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै॥3॥ जय केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी। सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दु:खहारी॥4॥ जय कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर-राजत सम ज्योति॥5॥ जय शुम्भ निशुम्भ विडारे, महिषासुर-धाती। धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती॥6॥ जय चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥7॥ जय ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी। आगम-निगम-बखानी, तुम शिव-पटरानी॥8॥ जय चौंसठ येगिनी गावत, नृत्य करत भैरूं। बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू॥9॥ जय भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।मन वांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥10॥ जय कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥11॥ जय श्रीअम्बेजी की आरती जो कोई नित गावैं। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै॥12॥ जय

श्रीजगदम्बे जी की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली जय दुर्गे खप्पर वाली तेरे ही गुण गायें भारती ।
॥ ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
तेरे जगत के भक्त जनन पर भीर पड़ी है भारी माँ दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।
सौ सौ सिंहों से तू बल शाली अष्ट भुजा वाली, दुष्टों को पल में संहारती॥
ओ मैया, हम सब उतारें तेरी आरती॥
माँ बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता, पूत कपूत सुने है पर न माता सूनी कुमाता।
सब पर करुणा दरशाने वाली, अमृत बरसाने वाली। दुखियायें के दु:ख को निवारती॥
ओ मैया, हम सब उतारें तेरी आरती॥
नहीं माँगते धन और दौलत न चाँदी न सोना, माँ हम तो माँगें एक छोटा सा कौना
सतियों के सत को संवारती, ओ मैया, हम सब उतारें तेरी आरती॥

श्रीराधारानी जी की आरती

जै जै श्रीराधेजू मैं शरण तिहारी। लोचन आरती जाऊँ बलिहारी॥जै जै॥
पाट पाटम्बर ओढ़े नीली सारी। सीस के सैंदुर जाऊँ बलिहारी॥जै जै॥
रतन सिंहासन बैठी श्रीराधे। आरती करें हम पिय संग जोरी॥जै जै॥
झलमल-झलमल मानिक मोती। अब लख मन मोहै पिय संग जोरी॥ जै जै॥
श्रीराधे पद पङ्कज भगति की आशा। दास मनोहर करत भरोसा॥ जै जै॥

श्रीहनुमान जी की आरती

आरति कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवरकाँपै। रोग दोष जाके निकट न झांकै॥
अंजनि पुत्र महा बल दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सी कोटि समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाय संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावण की भुजा उखाड़े॥
बायें भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा सन्तजन तारे॥
सुर नर मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमान जी की आरति गावै। बसि बैकुण्ठ परमपद पावै॥

श्रीखाटू श्याम जी की आरती

ॐ जय श्रीश्याम हरे बाबा जय श्रीश्याम हरे, खाटू श्याम विराजत, अनुपम रूप धरे॥
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर ढुरे। तन केसरिया बागो कुण्डल श्रवण पड़े॥
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे। खेवत धूप अग्नि पर दीपक ज्योति जरे॥
मोदक खीर चूरमा, सुवरन थाल भरे। संवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे॥
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे। भक्त आरती गावैं जय जयकार करे॥
जो ध्यावै फल पावै, सब दु:ख से उबरे। सेवक जन निज मुख से श्याम श्याम उचरे॥
श्रीश्यामबिहारीजी की आरती जो कोई नर गावे। कहत भक्तजन स्वामी मनवांछित फल पावे॥
जै श्रीश्याम हरे बाबा जै श्री श्याम हरे। निज भक्तों के तुमने, पूरन काम करे॥

श्रीसत्यनारायण जी की आरती

ॐजय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय लक्ष्मीरमणा, सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा॥ ॐ॥
रत्न जड़ित सिंहासन, अद्‌भुत छबि राजे, नारद करत निरंजन घण्टा ध्वनि बाजै॥ ॐ..॥
प्रकट भये कलिकारन द्विज को दरस दियौ, बूढ़ौ ब्राह्मण बनके कंचन महल किया॥ॐ..॥
दुर्बल भील कठियारी जिन पर कृपा करी, चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत हरी॥ॐ..॥
वैश्य मनोरथ पायौ, श्रद्धा तज दीनी, सो फल भोगौ प्रभुजी फिर स्तुति कीन्हीं॥ॐ..॥
भव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरयौ, श्रद्धा धारण कीन्हीं तिनके काज सरयौ॥ॐ..॥
ग्वाल-वाल संग राजा वन में भक्ति करी, मनवांछित फल दीनौ, दीनदयाल हरी॥ॐ..॥
चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा, धूप-दीप तुलसी से राजी सतदेवा॥ॐ..॥
श्रीसत्यनारायणजी की आरती जो कोई नर गावै, कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावै॥ॐ॥

श्रीगिरधर जी की आरती

हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ, बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ। हे गिरधर.... ॥

मोर मुकुट प्यारे शीश पै सौहे, प्यारी वंशी मेरो मन मोहे।
देखि छवि बलिहारी जाऊँ॥ हे गिरधर..... ॥

चरणों से निकली हैं गंगा प्यारी, जिसने सारी दुनियाँ तारी।
उन चरणों के दर्शन पाऊँ॥ हे गिरधर..... ॥

व्यास दास के नाथ आप हो, दु:ख सुख जीवन प्यारे साथ आप हो।
प्रभु चरणों में शीश नवाऊँ॥ हे गिरधर..... ॥

संग सोहे वृषभानु दुलारी, ललितादिक सब सखियां प्यारी।
बास सदा वृन्दावन पाऊँ॥ हे गिरधर..... ॥

श्रीबालकृष्ण जी की आरती

आरती बालकृष्ण की कीजै। अपनो जनम सफल करि लीजै॥
श्रीयशुदा कौ परम दुलारौ। बाबा की अँखियन को तारो॥
गोपिन के प्राणन ते प्यारौ। इन पै प्राण न्यौछावर कीजै॥
आरती बालकृष्ण.....

बलदाऊ को छोटो भैया। कनुआ कह-कह बोलत मैया॥
परम मुदित मन लेत बलैया। यह छबि नैनन में भर लीजै॥
आरती बालकृष्ण .....

श्रीराधा वर सुधर कन्हैया। ब्रजजन को नवनीत खवैया॥
श्रीराधा वर सुधर कन्हैया। ब्रजजन को नवनीत खवैया॥
देखत ही मन लेत चुरैया। अपनों सर्बस इनको दीजै॥
आरती बालकृष्ण....

तोतरि बोलन मधुर सुहावै। सखन संग खेलत सुख पावै॥
सोई सुकृति जो इनको ध्यावै। अब इनको अपनो कर लीजै॥
आरती बालकृष्ण....

✲✲✲

श्रीभागवत भगवान की आरती

श्रीभागवत भगवान की है आरती। पापियों को पाप से है तारती॥

यह अमर ग्रन्थ, यह मुक्ति पंथ, यह पंचम वेद निराला
नव ज्योति जगाने वाला।
हरि नाम यही, हरि धाम यही। जग के मंगल की आरती॥ पापियों को ...

यह शान्त गीत, पावन पुनीत, पापों को मिटाने वाला
हरि दरस कराने वाला।
ये सुख करणी, ये दु:ख हरणी। ये मधुसूदन की आरती॥ पापियों को ...

यह मधुर बोल, जग पन्थ खोल, सन्मार्ग दिखाने वाला
बिगड़ी को बनाने वाला।
श्रीराम यही घनश्याम यही। प्रभु की महिमा की आरती।। पापियों को ...

❋❋❋

श्रीभागवत महापुराण जी की आरती

आरती अति पावन पुरान की। धर्म भक्ति विज्ञान खान की॥

महापुराण भागवत निर्मल। शुक मुख विगलित निगम कल्पफल॥
परमानन्द सुधारस मयकल। लीला रति रस रस-निधान की॥1॥

कलिमल मथनि त्रिताप निवारिनि। जन्म मृत्युमय भव-भय हारिनि॥
सेवत सतत सकल सुख कारिनि। सुमहौषधि हरि चरित गान की॥2॥

विषय विलास विमोह विनाशिनि। विमल विराग विवेक विकाशिनी॥
भगवतत्त्व रहस्य प्रकाशिनि। परम ज्योति परमात्म ज्ञान की॥3॥

परमहंस मुनि मन उल्लासिनि। रसिक हृदय रस रास विलासिनि॥
भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुदासिनि। कथा अकिंचन प्रिय सुजान की॥4॥

❋❋❋

श्रीश्यामा जी की आरती

श्यामा तेरी आरती, कन्हैया तेरी आरती सारा संसार करेंगे कर जोर के ॥
सिर पर सोहना मुकुट विराजे, गल बैजन्ती माला साजे।
और फूलन के हार करेंगे कर जोर के ॥ श्यामा तेरी ...
ब्रह्मादिक तेरो यश गावै, नारद शारद ध्यान लगावै।
और करै जै जैकार, करैंगे कर जोड़ कै ॥ श्यामा तेरी ...
मैं हूँ दीनन दुखिया भारी, आया हूँ प्रभु शरण तुम्हारी।
रखियो लाज हमार, करेंगे कर जोर के ॥ श्यामा तेरी ...
अपने चरणन की भक्ति दीजै, अपनी शरण में मोहे रखलीजै।
करौ भव सागर पार, करेंगे कर जोर के ॥ श्यामा तेरी ....
प्रेम सहित जो आरती गावै, श्रीराधा माधव के मन भावै।
आयो शरण तुम्हार, करेंगे कर जोर के ॥ श्यामा तेरी ....

श्रीरामजी की स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारूणं।
नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारूणं॥
कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुँ तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दलन दुष्ट निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशलचन्द दशरथ नंदनम्॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित् खरदूषणम्॥
इति वदति तुलसीदास शंकर शेषमुनि-मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल-दल गंजनम्॥
मनु जाहि राचेउ मिलिहिं सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

मंत्र पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कान कामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्य भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति। तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारोमरुत्त-स्याऽऽवसन्गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्व्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरूत व्विश्वतोमुखो व्विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नः लक्ष्मीः प्रचोदयात्।
ॐ नंदनंदनाय विद्महे यशोदानंदनाय धीमहि। तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।
ॐ वृषभानुजायै च विद्महे कृष्णवल्लभायै च धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्।।
ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।
ॐ हंस हंसाय विद्महे, परमहंसाय धीमहि। तन्नः शुकः प्रचोदयात्।
ॐ आन्जनेयाय विद्महे रामभक्ताय धीमहि। तन्नो वीरः प्रचोदयात्।
ॐ महादिव्यै च विद्महे, सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।
ॐ ब्रह्मरूपाय विद्महे, रुद्ररूपाय धीमहि। तन्नो गुरुवः प्रचोदयात्।
सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः, पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः।
बिल्वप्रवालतुलसीदलमञ्जरीभिः, त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तः प्रसीद परमेश्वर।
मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि, इति मन्त्रैः पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत्।

प्रदक्षिणा

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषंगिणः। तेषां ७७ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ यानि यानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि-तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे-पदे॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

धर्म रक्षा संघ—परिचय एवं उद्देश्य

परम आराध्य भगवान् श्रीकृष्ण की लीला भूमि ब्रजमण्डल के श्रीधाम वृन्दावन में सनातन धर्म एवं संस्कृति की रक्षा और संवर्धन हेतु लोकहित का ध्यान रखते हुए श्रीराम नवमी संवत् 2060 तदनुसार दिनांक 11 अप्रैल 2003 शुक्रवार को परम पूज्य महन्त श्रीनृत्यगोपाल दास जी महाराज के संरक्षण में ब्रज के प्रमुख संत धर्माचार्य एवं धर्म सेवकों के सान्निध्य में **धर्म रक्षा संघ** की स्थापना की गयी। धर्म रक्षा संघ अखंड भारत हिन्दू राष्ट्र की भावना से ओतप्रोत एक गैर राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक संगठन है। धर्म रक्षा संघ मठ, मन्दिर, आश्रम, धार्मिक स्थलों एवं वैदिक सनातन धर्म की रक्षा एवं संवर्धन करने के साथ सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु संकल्पित है। वर्तमान पीढ़ी के साथ आने वाली पीढ़ी को सनातन संस्कृति के अनुसार संस्कारित कर भारत को विश्व गुरु बनाना हमारे प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। अखंड भारत हिन्दू राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त कर भगवा ध्वज का सम्मान बढ़ाना हमारा प्रयास है। सनातन धर्म की रक्षा से ही राष्ट्र की रक्षा संभव है।

समाज को धर्म पूर्वक जोड़कर सनातन-संस्कारों का संरक्षण करना आज की महती आवश्यकता है। हमारा भारत वर्ष अखण्ड हिन्दू राष्ट्र बनकर पुनः विश्वगुरु के रूप में स्थापित हो, श्रीरामजन्म भूमि की भाँति श्रीकृष्णजन्मभूमि अपने गौरवशाली रूप में स्थापित हो। धर्म रक्षा संघ के इस संकल्प में आईये हम सब एक जुट होकर तन-मन-धन से इस प्रयास में संकल्प पूर्वक प्रस्तुत हों।

धर्म रक्षा संघ के कल्याणकारी पावन प्रकल्पों हेतु अपनी सहयोग राशि सीधे बैंक खाते में प्रेषित कर पुण्य के भागी बन सकते हैं।

A/c Name : DHARM RAKSHA SANGH
Current A/c No. : 101705500235
Bank Name : ICICI BANK
IFS Code : ICIC0001017
Branch : Vrindavan

Scan and Pay

Follow us on

Dharm Raksha Sangh
Mob. No. +91-9084624790

G A

Vide URNo. AACTD6153HE20221 • Valid upto AY 2025-26

ब्रजक्षेत्र के प्रमुख मन्दिरों के दर्शन का समय

	शीतकाल(दीपावली के बाद दौज)	ग्रीष्मकाल (होली के बाद दौज)
श्रीबाँकेबिहारी मन्दिर	प्रात: 8.55-1.00	प्रात: 7.55-12.00
	सायं 4.30-8.30	सायं 5.30-9.30
श्रीनिधिवन मन्दिर	प्रात: 8.45-1.00	प्रात: 7.45-12.00
	सायं 4.30-6.30	सायं 5.30-8.30
श्रीराधाबल्लभ मन्दिर	मंगला प्रात: 6.00 बजे	मंगला प्रात: 5.30 बजे
	प्रात: 8.00-1.00	प्रात: 7.00-12.00
	सायं 6.00-8.30	सायं 5.30-9.00
श्रीसेवाकुंज मन्दिर	प्रात: 6.00-12.00	प्रात: 5.30-12.00
	सायं 4.00-6.30	सायं 4.30-7.00
श्रीराधारमण मन्दिर मंगला	प्रात: 5.30 बजे	मंगला प्रात: 5.00 बजे
	प्रात: 9-1.00	प्रात: 8.30-12.30
	सायं 5.30-9.00	सायं 6.00-9.30
श्रीरंगनाथजी मन्दिर	प्रात: 8.00-11.30	प्रात: 8.30-11.30
	सायं 3.00-6.00	सायं 4.30-7.30
श्रीकृष्णबलराम मन्दिर (इस्कॉन)	प्रात: 7.30-12.30	प्रात: 7.00-12.00
	सायं 4.00-8.00	सायं 4.30-8.30
श्रीकात्यानी पीठ	प्रात: 7.00-11.00	प्रात: 7.00-11.00
	सायं 5.30-8.00	सायं 5.30-8.00
प्रेम मन्दिर	प्रात: 5.00 से 12.00	प्रात: 5.00 से 12.00
	सायं 4.30 से 8.30	सायं 4.30 से 8.30
म्यूजिकल फुब्बारा	सायं 7.00 से 7.30 बजे तक	
द्वारिकाधीश मन्दिर	मंगला- प्रात: 6.30-7.00	प्रात: 6.30-7.00
(मथुरा)	शृंगार- प्रात: 7.40-7.55	प्रात: 7.40-7.55
	ग्वाल- प्रात: 8.25-8.40	प्रात: 8.25-8.40
	राजभोग- प्रात: 10.00-10.30	प्रात: 10.00-10.30
	उत्थापन- सायं 3.30-से 3.50	सायं 4.00-4.20
	भोग- सायं 4.20-4.40	सायं 4.50-5.05
	संध्या आरती- सायं 4.55-5.10	सायं 5.25-5.40
	शयन आरती- सायं 6.00-6.30	सायं 6.30-7.00
श्रीकृष्ण जन्मस्थान (मथुरा)	प्रात: 6.00-12.00	प्रात: 5.00-12.00
	अपराह्न 3.00-8.00	सायं 4.00-9.00
बलदेव(दाऊजी)	प्रात: 7.00-12.00	प्रात: 6.00-11.00
	दोपहर 3.00-4.00	दोपहर 4.00-5.00
	सायं 6.00-8.00	सायं 7.00-9.00
बरसाना (श्रीजी मन्दिर)	प्रात: 5.30-1.30	प्रात: 5.00-1.30
	सायं 4.30-9.00	सायं 5.00-9.30